2 मई 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 3 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मई (प्रथम), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

के अधिवेशन में भाग लेने हेतु

● अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का 41वाँ वार्षिक अधिवेशन शनिवार दिनांक 27 मई को खनियांधाना (म.प्र.) में संपन्न होने जा रहा है।

● अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की सभी शाखाओं से अपेक्षा है कि अपने प्रगति विवरण एवं वर्ष के दौरान किये गये उल्लेखनीय कार्यों का ब्यौरा दिनांक 15 मई 2017 तक हमारे केन्द्रीय कार्यालय को अवश्य भेज दें। ताकि अधिवेशन में पुरस्कृत करने हेतु उनके बारे में विचार किया जा सके।

● यदि आप अधिवेशन में अपने कोई विशिष्ट सुझाव प्रस्तुत करना चाहते हैं तो कृपया वे सुझाव हमें लिख भेजें ताकि अधिवेशन में बोलने हेतु आपको अवसर दिया जा सके।

● फैडरेशन की सभी शाखाओं से अपेक्षा है कि दिनांक 26 मई को खनियांधाना में आयोजित होने जा रहे अधिवेशन में भाग लेने हेतु आने वाले अपने प्रतिनिधियों की सूचना हमारे केन्द्रीय कार्यालय, जयपुर अवश्य भेजें, ताकि उनके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था संभव हो सके।

● रिकॉर्ड अपडेट करने हेतु जिन शाखाओं ने अपने विवरण अभी तक हमें नहीं भिजवाये हैं, वे अपने विवरण शीघ्र भिजवा दें। **– महामंत्री**

(1) ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458; **Email - ptstjaipur@yahoo.com (2)** श्री नंदीश्वर दिगम्बर जैन मन्दिर, चेतनबाग, खनियांधाना, जिला-शिवपुरी 473990 (म.प्र.) मोबाइल - 09575305898 (सोमिल शास्त्री), 09644122108 (आकाश शास्त्री)

तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार में आपका भी महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है–

प्रशिक्षण पाने हेतु प्रशिक्षण शिविर में पधारें

यदि आप चाहते हैं कि –

– आपके नगर, मुहल्ले और घर में वीतराग-विज्ञान पाठशाला का संचालन हो।

– आपके बालक जैनदर्शन का प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करें

तो उक्त शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में स्वयं सम्मिलित हों, अपने परिजनों एवं बालकों को भी साथ लायें एवं प्रशिक्षण लेने हेतु अधिकतम लोगों को प्रेरित करें।

प्रशिक्षण शिविर के मुख्य आकर्षण

- सी.डी. के माध्यम से पू. गुरुदेवश्री के प्रवचन
- प्रतिदिन डॉ. भारिल्ल के प्रवचन
- पूरे 18 दिन तक ब्र. सुमतप्रकाशजी के प्रवचन व समागम
- दिन में चार बार समागत विद्वानों के प्रवचन
- वृहद् विद्वत्समागम
- प्रौढ एवं बाल शिक्षण कक्षायें
- प्रवेशिका प्रशिक्षण एवं बालबोध प्रशिक्षण कक्षायें
- प्रतिदिन सामूहिक जिनेन्द्र पूजन, विधान एवं भक्ति
- प्रतिदिन रोचक व ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम
- युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन
- स्नातक परिषद का सम्मेलन
- विद्वत्परिषद की कार्यशाला

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का –

आदर्श विद्यार्थी पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय (सत्र 2016-17) की पाँचों कक्षाओं के आदर्श विद्यार्थियों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', श्री कैलाशजी सेठी, श्रीमती कमला भारिल्ल आदि महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम में उपाध्याय कनिष्ठ से पवित्र जैन आगरा, उपाध्याय वरिष्ठ से सम्मेद खोत हुपरि, शास्त्री प्रथम वर्ष से जितेन्द्र जैन, शास्त्री द्वितीय वर्ष से अभय जैन खड़ैरी, शास्त्री तृतीय वर्ष से अनुभव जैन भिण्ड, चिकित्सा क्षेत्र में ज्ञायक जैन अमरमऊ को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त विशेष उन्नति पुरस्कार सिद्धांत शेट्टी उगार को एवं आदर्श कक्षा पुरस्कार उपाध्याय कनिष्ठ (40वाँ बैच) को दिया गया।

पवित्र जैन

सम्मेद खोत

जितेन्द्र जैन

अभय जैन

अनुभव जैन

ज्ञायक जैन

सिद्धांत शेट्टी

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

संयोग से सेठ सिद्धोमल मनोवांछित सर्वश्रेष्ठ कन्या के साथ अपने पुत्र संजू की शादी करने में सफल भी हो गये। इसतरह ज्ञान, विज्ञान और सुदर्शन के प्रयासों से और माता-पिता के प्रयत्नों से संजू पुन: अपने घर वापिस आ गया।

संजू की वापसी और योग्य कन्या से उसका विवाह सम्बन्ध हो जाने से उसके माता-पिता तो प्रसन्न हुए ही, नागरिकों और उसकी मित्र-मंडली को भी भारी प्रसन्नता हुई।

सरला एवं सुनीता के सम्पर्क में रहने से संजू के चरित्र के बारे में जो भ्रम खड़े हो गये थे, यथासमय उनका भी निराकरण हो गया।

गलतफहमियों से भी वातावरण बहुत विषाक्त हो जाता है। यदि यह जानना हो, इसका प्रत्यक्ष अनुभव करना हो तो संजू, सरला और सुनीता के चरित्रों से जाना जा सकता है। वे दोनों पूर्ण पवित्र और सदाचारिणी थीं; पर उन्हें समाज ने संजू को आश्रय देने के कारण संदेह की दृष्टि से देखा और पूर्ण दुराचारी मानकर समाज से बहिष्कृत कर दिया था। संजू के पिता सेठ सिद्धोमल ही उन्हें अपमानित और समाज से बहिष्कृत करने में अग्रणी थे। वे समाज के सरपंच जो थे। पुत्र मोह ने ही उन्हें अपने सरपंच पद का दुरुपयोग करने को विवश कर दिया था। संजू के पथभ्रष्ट होने में उन्हें सारा दोष सरला व सुनीता का ही नजर आ रहा था। जबकि स्थिति कुछ और ही थी। पर वे क्या करें, मोह की महिमा ही विचित्र है। अस्तु यदि संजू ने आगे आकर उन्हें अग्नि-परीक्षा की कसौटी पर न कसा होता तो बेचारी वे तो बेमौत मारी ही गई थीं।

सरला और सुनीता की समस्या सुलझाने के बाद संजू इस अवसर की तलाश में था कि वह धीरे-धीरे अपने पापा को विश्वास में लेकर उन्हें उनकी उन कमजोरियों का आभास कराये, जिनके कारण वे सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में इतना समय देने एवं धन खर्च करने के बावजूद भी लोगों की दृष्टि में श्रद्धेय नहीं बन पाये, बल्कि लोग उन्हें महत्वाकांक्षी और नाम तथा धन का लोभी ही समझते रहे।

लोगों को सेठ सिद्धोमल के व्यक्तित्व को समझने में कोरा भ्रम नहीं था, कुछ-कुछ वस्तुस्थिति भी ऐसी ही थी। वे अपने को आवश्यकता से अधिक चतुर और बुद्धिमान समझते भी थे। उन्हें अपने में अपनी कमियों के बजाय विशेषतायें ही अधिक दिखाई देती थीं, जबकि सत्य यह है कि मानव को दुनिया में कुछ कर दिखाने के लिए अपनी विशेषताओं के साथ अपनी कमियाँ-कमजोरियाँ भी नजर आनी चाहिए।

हमेशा अपनी कमियों एवं कमजोरियों पर और दूसरों की उन विशेषताओं पर विशेष ध्यान दो, जिससे उन्हें यश और सफलता मिली हो। तथा उनकी उन विशेषताओं को अपनी कमियों के स्थान में इस तरह भरो कि वे भद्दे पेबन्द न बनकर दूध में चीनी की तरह घुल जावें – एकमेक हो जावें।

संजू अपने पापा को इसी सत्य के निकट लाना चाहता था। संजू छोटी उम्र में भी अपने जीवन के उतार-चढावों के कारण अधिक अनुभवी हो गया था। और वैसे भी उम्र से समझदारी और बुद्धिमानी का कोई खास सम्बन्ध नहीं है। कम उम्र के व्यक्ति भी अधिक उम्रवालों से कहीं अधिक समझदार और बुद्धिमान हो सकते हैं।

अत: यदि संजू अपने पिता को सही राह दिखाने की सोच रहा था तो ऐसा कोई अनर्थ नहीं कर रहा था, और वह तो इतना समझदार था कि उसने पहले ही सोच लिया था कि बड़ों का पूरा बड़प्पन और उनकी पूरी मान-मर्यादा के साथ विनयपूर्वक ही वह अपनी बात रखेगा। वह उन्हें ऐसा अहसास ही नहीं होने देगा, जो कहने-सुनने में 'छोटे मुँह बड़ी बात' सी लगे।

अपने इकलौते बेटे संजू को भी सन्मार्ग पर न लगा पाने वाले और अपनी अक्ल की अजीर्णता से उसे घर छोड़ने तक की स्थिति में पहुँचा देने वाले सेठ सिद्धोमल ने अपने धन-दौलत की बदौलत समाज का संरक्षक बनकर पूरे समाज को मार्गदर्शन देने का ठेका ले रखा था।

इतना ही नहीं रुपये-पैसों के बलबूते पर वे न्यायपंचायत के सरपंच भी बने बैठे थे। समय-समय पर दान-दक्षिणा देकर और चन्दा-चिट्ठा लिखाकर उन्होंने अनेक सामाजिक संस्थाओं, संगठनों और ट्रस्टों के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष और कार्याध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पदों को भी हथिया लिया था। इन पदों पर पदासीन होने से उन्हें अपने बड़ेपने का भ्रम भी हो गया था। **(क्रमश:)**

आवश्यक सूचना

अमेरिका में तत्त्वप्रचार के अवसर पर शिकागो में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री – फाल्गुनी बेन के घर पर ठहरेंगे। **संपर्क सूत्र – फोन- +1-224-226-3995, 1-847-330-1088 (घर)**

स्वर्ण जयंती के मायने (24)
तत्त्वप्रचार भी आत्मकल्याण के लिये ही

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

आत्मार्थी स्वाध्यायी जीवों में अक्सर एक प्रवृत्ति पनपने लगती है, वे मात्र अपने स्वाध्याय में ही मगन रहना चाहते हैं और तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ उन्हें अपने वक्त की बर्बादी व भारभूत प्रवृत्ति दिखाई देती है। वे न सिर्फ स्वयं तत्त्वप्रचार की गतिविधियों से अलिप्त बने रहते हैं वरन् अन्य साधर्मियों को भी उनसे विमुख करने का प्रयास करते हैं।

ऐसे विचार वाले लोगों से मैं दो बातें कहना चाहता हूँ – एक आगम के आधार पर और दूसरी तर्क-युक्तिपूर्ण –

पहली बात तो यह कि **प्रत्येक जीव को अपनी भूमिकानुसार रागादि की विद्यमानता के कारण अनेक प्रकार के विकल्प आते हैं और तत्संबंधी प्रवृत्ति भी पायी जाती है।**

हम सभी गृहस्थ लोग अपनी भूमिका के अनुरूप अपनी आजीविका हेतु दिनरात धन्धे-व्यवसाय में रचेपचे रहते हैं। शादी-ब्याह, भवन निर्माण व मनोरंजन हेतु भ्रमणादिक भी करते हैं और तो और वाद-विवाद करते हैं, हाथापाई पर उतर आते हैं, और तो और कोर्ट-कचहरी तक भी पहुँच जाते हैं। कभी-कभी तो हमें न्याय-नीति का ख्याल तथा उचित-अनुचित का विवेक भी नहीं रहता है।

ऐसी भूमिका वाले लोग यदि तत्त्वप्रचार की बात आने पर इसे व्यर्थ की प्रवृत्ति बतलाकर स्वयं इससे विमुख रहें और अन्यों को भी इससे विमुख करें तो यह तो उनका घोर अविवेक ही है न ?

अरे ! आगमानुसार तो षष्टम गुणस्थानवर्ती ऐसे भावलिंगी संत जो प्रत्येक अंतर्मुहूर्त में एक बार अवश्य ही आत्मा का अनुभव करते हैं, अपने विरहकाल में (दो ध्यानस्थ दशाओं के बीच का काल) धर्मोपदेश भी देते हैं, ग्रंथों की रचना भी करते हैं, अपने संघस्थ साधुओं को पढाते हैं और तो और अनुशासनादिक भी करते हैं।

हम तो अभी अणुव्रती (पंचम गुणस्थानवर्ती) भी नहीं हैं, आत्मानुभवी सम्यग्दृष्टि (चतुर्थ गुणस्थानवर्ती) भी विरले ही होंगे, अन्य सभी तो बादशाही गुणस्थान वाले (मिथ्यादृष्टि) ही हैं। यदि हमें तत्त्वप्रचार में जुड़ने का भाव नहीं आता है तो हमारा यह व्यवहार आत्मा (हम स्वयं) के प्रति हमारी घोर उपेक्षा और अनंतानुबंधी द्वेष ही है अन्य कुछ नहीं।

पूज्य गुरुदेवश्री तो कहा करते थे कि यदि किसी कौए को कहीं भोज्यसामग्री दिखाई दे तो पहिले वह कांव-कांव करके अपने अन्य साथियों को बुलाता है और फिर सभी साथ में मिलकर भोजन करते हैं।

तुझे यह तत्त्व मिला, आत्मकल्याणकारी जिनवाणी मिली और यदि तू अपने परिजनों, सगे सम्बन्धियों, मित्रों, साधर्मीजनों व अन्य जनसामान्य को इस मार्ग पर न लगावे तो कौओं से भी गयाबीता कहलायेगा।

अब दूसरी बात –

जगत का प्रत्येक प्राणी, चाहे वह एक इन्द्रिय हो या पंचेन्द्रिय यहाँ तक कि एककोशीय प्राणी भी, अपने जीवन में अन्य कुछ भी करे या न करे पर अपनी संतति बढाने का कार्य अवश्य करता है। अधिसंख्य प्राणी तो मात्र यही कार्य करते हैं। यह उनमें पायी जाने वाली सामान्य प्रवृत्ति है कि अपनी संतति की वृद्धि करें।

यदि हम मात्र मनुष्यों की ही बात करें तो पायेंगे कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी देश, समाज, धर्म या परिवार का प्रतिनिधित्व करता हो, अपने समुदाय को बढाने का प्रयास करता है। ऐसे में **एक आत्मार्थी को आत्मार्थियों का समुदाय बढाने की रुचि न हो यह न तो उचित है और न ही संभव ही।** यदि व्यावहारिक दृष्टिकोण से विचार करें तो हम पायेंगे कि निरंतर स्वाध्याय में प्रवृत्त रहने के लिये भी यह अत्यंत आवश्यक है कि हम निरंतर अपने समान ही रुचि वाले लोगों की संगति में रहें। हमारे चारों ओर अपनी ही रुचि के लोग हों।

यदि हम अन्य रुचि वाले लोगों के संपर्क में आयेंगे तो वे हमें हमारे पथ से भ्रष्ट करने में निमित्त बनेंगे ही बनेंगे। यदि हम राजनीतिज्ञों के संपर्क में आयेंगे तो वे हमें राजनीति में घसीटेंगे, यदि हम व्यापारियों के संपर्क में आयेंगे तो वे हमें धन के प्रलोभन में उलझायेंगे। **यदि हमारे परिजन हमारे समान ही रुचि के नहीं होंगे तो हमें अपने घर पर भी स्वाध्याय के अनुकूल वातावरण मिलना दुर्लभ हो जायेगा,** अपने ही घर पर तत्त्वरसिक साधर्मियों का साहचर्य भी संभव नहीं हो सकेगा। इसके विपरीत यदि घर-परिवार में सभी लोग समान रूप से तत्त्वरसिक होंगे तो एक व्यक्ति से दूसरे को बल मिलेगा, वे आपस में तत्त्वचर्चा कर सकेंगे, सामूहिक स्वाध्याय कर सकेंगे। इसी प्रकार अपने घर के आसपास साधर्मियों का वास होने पर नियमित तौर पर सामूहिक स्वाध्याय आदि के आयोजन से वातावरण अध्यात्ममय बना रह सकेगा।

हमारी वर्तमान भूमिका में चित्त चंचल होता है और आसपास के वातावरण से बहुत अधिक प्रभावित होता है, जैसा वातावरण पाता है वैसा ही ढलने लगता है इसलिये आत्मसाधना में स्थितिकरण हेतु आत्मार्थी के लिये अपने आसपास तत्त्वरसिक लोग और स्वाध्याय का वातावरण होना अत्यंत आवश्यक है, ऐसा तभी संभव है जब तत्त्वरसिक आत्मार्थियों का समुदाय निरंतर बढता रहे।

इसप्रकार हम पाते हैं कि **तत्त्वप्रचार का कार्य भी आत्मसाधना का ही एक अत्यंत आवश्यक व महत्वपूर्ण हिस्सा है और कोई भी आत्मार्थी इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकता है।**

आइये ! हम सभी तत्त्वप्रचार के इस कार्य में जुट जाएँ और अपने आसपास तत्त्वज्ञान की गंगा बहाकर सम्पूर्ण वातावरण धर्ममय बना दें। यही हितकर है।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का
41वाँ अधिवेशन खनियांधाना में
शनिवार, दिनांक 27 मई 2017

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययनहेतु प्रश्नोत्तर

नोट :- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इस क्रम में नौवें अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं।

प्रश्न : 'आत्मा का हित मोक्ष है' कथन को सिद्ध कीजिये।

उत्तर : संसार में सभी प्राणी (आत्मा) सुख हो, दु:ख न हो - ऐसा स्वाभाविक रूप से चाहते हैं और प्रत्येक प्राणी सारे प्रयत्न इसी प्रकार के करता है कि उसे सुख हो दु:ख ना हो। कदाचित् परवशता से दु:ख हो तो उसे भोगता है; परन्तु स्ववशता से कोई भी किंचित् भी दु:ख सहना नहीं चाहता।

सुख का सच्चा लक्षण निराकुलता है और निराकुलतारूप सुख मोक्ष में है, अत: आत्मा का हित मोक्ष है।

प्रश्न : संसार दशा में भी पुण्य के उदय होने पर सुख देखा जाता है, इसलिये केवल मोक्ष में ही सुख है - ऐसा क्यों कहते हो ?

उत्तर : पुण्य उदय से संसार में किसी को कभी जो सुख देखा/कहा जाता है, वह असाताजन्य तीव्र आकुलता कम हो जाने से कहा है। जैसे किसी को 105 डिग्री बुखार हो, फिर वह 100 डिग्री रह जाये तो वह अपने को अच्छा हो गया ऐसा महसूस करता है; परन्तु परमार्थ से तो उसे अभी बुखार ही है।

दूसरी बात यह है कि पुण्य के उदयरूप सुख भी जिसे है वह सुख उसे स्थिर/सदाकाल नहीं रहता; क्योंकि यह पुण्य-पाप के उदयाधीन है।

तीसरी बात यह है कि आकुलता का घटना-बढना कषायभावों के अनुसार होता है। बाह्य सामग्री के अनुसार नहीं, इसलिये संसार में आकुलता मिटाने की आकुलता निरंतर बनी रहती है; अत: संसार में किसी अपेक्षा सुख नहीं - ऐसा कहा गया है।

प्रश्न : मोक्ष का उपाय काललब्धि आने पर भवितव्य अनुसार बनता है या मोहादि के उपशमादि होने पर बनता है या अपने पुरुषार्थ से उद्यम करने पर बनता है ?

उत्तर : एक कार्य होने में अनेक कारण मिलते हैं। सो मोक्ष का उपाय बनता है वहाँ तो पूर्वोक्त तीनों ही कारण मिलते हैं और नहीं बनता वहाँ तीनों ही कारण नहीं मिलते। पूर्वोक्त तीन कारण कहे उनमें काललब्धि व होनहार तो कोई वस्तु नहीं है, जिस काल में कार्य बनता है, वही काललब्धि और जो कार्य हुआ वही होनहार। जो कर्म के उपशमादिक हैं वह पुद्गल की शक्ति है उसका आत्मा कर्त्ता-हर्त्ता नहीं है। पुरुषार्थ से उद्यम करते हैं सो यह आत्मा का कार्य है, इसलिये आत्मा को पुरुषार्थ से उद्यम करने का उपदेश देते हैं।

इसलिये जो जीव पुरुषार्थ से जिनेश्वर के उपदेशानुसार मोक्ष का उपाय करता है उसके काललब्धि व होनहार भी हुये और कर्म के उपशमादि हुए हैं तो वह ऐसा उपाय करता है। इसलिये जो पुरुषार्थ से मोक्ष का उपाय करता है उसको सर्व कारण मिलते हैं और उसको अवश्य मोक्ष की प्राप्ति होती है।

प्रश्न : द्रव्यलिंगी मुनि मोक्ष के अर्थ गृहस्थपना छोड़कर तपश्चरणादि करता है, वहाँ पुरुषार्थ तो किया, कार्य सिद्ध नहीं हुआ, इसलिये पुरुषार्थ करने से तो कुछ सिद्धि नहीं है ?

उत्तर : अन्यथा पुरुषार्थ से फल चाहे तो कैसे सिद्धि हो ? तपश्चरणादि व्यवहार साधन में अनुरागी होकर प्रवर्ते उसका फल शास्त्र में तो शुभबन्ध कहा है और यह उससे मोक्ष चाहता है, कैसे होगा ? यह तो भ्रम है।

प्रश्न : भ्रम का भी तो कारण कर्म ही है, पुरुषार्थ क्या करे ?

उत्तर : सच्चे उपदेश से निर्णय करने पर भ्रम दूर होता है; परन्तु ऐसा पुरुषार्थ नहीं करता, इसी से भ्रम रहता है। निर्णय करने का पुरुषार्थ करे तो भ्रम का कारण जो मोहकर्म, उसके भी उपशमादि हों तब भ्रम दूर हो जाये; क्योंकि निर्णय करते हुए परिणामों की विशुद्धता होती है, उससे मोह के स्थिति-अनुभाग घटते हैं।

प्रश्न : निर्णय करने में उपयोग नहीं लगाता, उसका भी तो कारण कर्म है ?

उत्तर : एकेन्द्रियादिक के विचार करने की शक्ति नहीं है, उनके तो कर्म ही का कारण है। इसके तो ज्ञानावरणादिक के क्षयोपशम से निर्णय करने की शक्ति हुई है, जहाँ उपयोग लगाये उसी का निर्णय हो सकता है। परन्तु यह अन्य निर्णय करने में उपयोग लगाता है, यहाँ उपयोग नहीं लगाता। सो यह तो इसी का दोष है, कर्म का तो कुछ प्रयोजन नहीं है।

प्रश्न : सम्यक्त्व-चारित्र का घातक मोह है, उसका अभाव हुए बिना मोक्ष का उपाय कैसे बने ?

उत्तर : तत्त्वनिर्णय करने में उपयोग न लगाये वह तो इसी का दोष है। तथा पुरुषार्थ से तत्त्वनिर्णय में उपयोग लगाये तब स्वयमेव ही मोह का अभाव होने पर सम्यक्त्वादिरूप मोक्ष के उपाय का पुरुषार्थ बनता है। इसलिये मुख्यता से तो तत्त्वनिर्णय में उपयोग लगाने का पुरुषार्थ करना तथा उपदेश भी देते हैं, सो यही पुरुषार्थ कराने के अर्थ दिया जाता है, तथा इस पुरुषार्थ से मोक्ष के उपाय का पुरुषार्थ अपने आप सिद्ध होगा।

प्रश्न : मोक्षमार्ग का स्वरूप बताइये।

उत्तर : सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का एकीभाव वही मोक्षमार्ग है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन का सच्चा लक्षण बताइये।

उत्तर : विपरीताभिनिवेशरहित जीवादिकतत्त्वार्थश्रद्धान वह सम्यग्दर्शन का लक्षण है। जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष - ये सात तत्त्वार्थ हैं। इनका जो श्रद्धान -'ऐसा ही है, अन्यथा नहीं है'- ऐसा प्रतीति भाव, सो तत्त्वार्थश्रद्धान; तथा विपरीताभिनिवेश जो अन्यथा अभिप्राय उससे रहित सो सम्यग्दर्शन है।

यहाँ विपरीताभिनिवेश के निराकरण के अर्थ 'सम्यक्' पद कहा है, क्योंकि 'सम्यक्' ऐसा शब्द प्रशंसावाचक है; वहाँ श्रद्धान में विपरीताभिनिवेश का अभाव होने पर ही प्रशंसा सम्भव है ऐसा जानना।

प्रश्न : तत्त्वार्थ सात ही क्यों होते हैं ?

उत्तर : यद्यपि तत्त्वार्थ अनन्त हैं; उनका सामान्य–विशेष से अनेक प्रकार प्ररूपण हो, परन्तु यहाँ एक मोक्ष का प्रयोजन है, इसलिये दो तो जाति अपेक्षा सामान्यतत्त्व और पाँच पर्यायरूप विशेषतत्त्व मिलाकर सात ही तत्त्व कहे।

प्रश्न : यहाँ विपरीताभिनिवेशरहित श्रद्धान करना कहा, सो प्रयोजन क्या ?

उत्तर : अभिनिवेश नाम अभिप्राय का है। सो जैसा तत्त्वार्थश्रद्धान का अभिप्राय है वैसा न हो, अन्यथा अभिप्राय हो, उसका नाम विपरीताभिनिवेश है। तत्त्वार्थश्रद्धान करने का अभिप्राय केवल उनका निश्चय करना मात्र ही नहीं है, वहाँ अभिप्राय ऐसा है कि जीव–अजीव को पहिचानकर अपने को तथा पर को जैसा का तैसा माने, आस्रव को पहिचानकर उसे हेय माने, बन्ध को पहिचानकर उसे अहित माने, संवर को पहिचानकर उसे उपादेय माने, निर्जरा को पहिचानकर उसे हित का कारण माने तथा मोक्ष को पहिचानकर उसको अपना परमहित माने – ऐसा तत्त्वार्थश्रद्धान का अभिप्राय है, उससे उलटे अभिप्राय का नाम विपरीताभिनिवेश है। सच्चा तत्त्वार्थश्रद्धान होने पर इसका अभाव होता है इसलिये तत्त्वार्थश्रद्धान है सो विपरीताभिनिवेशरहित है – ऐसा यहाँ कहा है।

प्रश्न : शास्त्रों में तो सम्यग्दर्शन की अनेक परिभाषायें आती हैं ? आप तत्त्वार्थश्रद्धान ही क्यों कहते हो ?

उत्तर : शास्त्रों में देव–शास्त्र–गुरु का श्रद्धान सम्यग्दर्शन, स्वपर का श्रद्धान सम्यग्दर्शन, आत्मा का श्रद्धान सम्यग्दर्शन, तत्त्वार्थ श्रद्धान सम्यग्दर्शन – इसप्रकार परिभाषायें मिलती हैं; परन्तु इन सबमें परस्पर अविनाभाविपना होने से कोई विरोध नहीं है। प्रयोजन की अपेक्षा से अलग–अलग प्रकार के कथन किये गये हैं।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन के लक्षण का कथन ऐसे अलग–अलग प्रकार से करने का प्रयोजन क्या है ?

उत्तर : तत्त्वार्थश्रद्धान लक्षण कहा है, वहाँ तो यह प्रयोजन है कि इन तत्त्वों को पहिचाने तो यथार्थ वस्तु के स्वरूप का व अपने हित–अहित का श्रद्धान करे तब मोक्षमार्ग में प्रवर्ते।

आपापर का भिन्न श्रद्धान लक्षण कहा है, वहाँ तत्त्वार्थश्रद्धान का प्रयोजन जिससे सिद्ध हो उस श्रद्धान को मुख्य लक्षण कहा है। जीव–अजीव के श्रद्धान का प्रयोजन आपापर का भिन्न श्रद्धान करना है तथा आस्रवादिक के श्रद्धान का प्रयोजन रागादिक छोड़ना है, सो आपापर का भिन्न श्रद्धान होने पर परद्रव्य में रागादि न करने का श्रद्धान होता है। इसप्रकार तत्त्वार्थश्रद्धान का प्रयोजन आपापर के भिन्न श्रद्धान से सिद्ध होता जानकर इस लक्षण को कहा है।

आत्मश्रद्धान लक्षण कहा है, वहाँ आपापर के भिन्न श्रद्धान का प्रयोजन इतना ही है कि आपको आप जानना। आपको आप जानने पर पर का भी विकल्प कार्यकारी नहीं है। ऐसे मूलभूत प्रयोजन की प्रधानता जानकर आत्मश्रद्धान को मुख्य लक्षण कहा है।

देव–गुरु–धर्म का श्रद्धान लक्षण कहा है, वहाँ बाह्य साधन की प्रधानता की है; क्योंकि अरहन्तदेवादिक का श्रद्धान सच्चे तत्त्वार्थ श्रद्धान का कारण है और कुदेवादिक का श्रद्धान कल्पित तत्त्वश्रद्धान का कारण है। सो बाह्य कारण की प्रधानता से कुदेवादिक का श्रद्धान छुड़ाकर सुदेवादिक का श्रद्धान कराने के अर्थ देव–गुरु–धर्म के श्रद्धान को मुख्य लक्षण कहा है।

प्रश्न : ये चार लक्षण कहे, उनमें यह जीव किस लक्षण को अंगीकार करे ?

उत्तर : मिथ्यात्व कर्म के उपशमादि होने पर विपरीताभिनिवेश का अभाव होता है। वहाँ चारों लक्षण युगपत् पाये जाते हैं। विचार अपेक्षा मुख्यरूप से तत्त्वार्थों का विचार करता है, आपापर का भेदविज्ञान करता है, आत्मस्वरूप ही का स्मरण करता है या देवादिक का स्वरूप विचारता है। इसप्रकार ज्ञान में तो नानाप्रकार विचार होते हैं, परन्तु श्रद्धान में सर्वत्र परस्पर सापेक्षपना पाया जाता है। तत्त्वविचार करता है तो भेदविज्ञानादि के अभिप्राय सहित करता है और भेदविज्ञान करता है तो तत्त्वविचारादि के अभिप्राय सहित करता है। इसीप्रकार अन्यत्र भी परस्पर सापेक्षपना है; इसलिये सम्यग्दृष्टि के श्रद्धान में चारों ही लक्षणों का अंगीकार है।

प्रश्न : सम्यक्त्व के लक्षण तो अनेक प्रकार कहे, उनमें तत्त्वार्थश्रद्धान लक्षण को मुख्य किया सो कारण क्या ?

उत्तर : तुच्छबुद्धियों को अन्य लक्षण में प्रयोजन प्रगट भासित नही होता व भ्रम उत्पन्न होता है। इस तत्त्वार्थश्रद्धान लक्षण में प्रगट प्रयोजन भासित होता है, कुछ भ्रम उत्पन्न नहीं होता, इसलिये इस लक्षण को मुख्य किया है।

तत्त्वार्थश्रद्धान लक्षण में तो देवादिक का श्रद्धान व आपापर का श्रद्धान व आत्मश्रद्धान गर्भित होता है, वह तो तुच्छबुद्धियों को भी भासित होता है। अन्य लक्षण में तत्त्वार्थश्रद्धान का गर्भितपना विशेष बुद्धिमान हों उन्हीं को भासित होता है, तुच्छबुद्धियों को नहीं भासित होता; इसलिये तत्त्वार्थश्रद्धान लक्षण को मुख्य किया है।

इसलिये यहाँ सर्वप्रकार प्रसिद्ध जानकर विपरीताभिनिवेश रहित जीवादि तत्त्वार्थों का श्रद्धान सो ही सम्यक्त्व का लक्षण है।

– संयोजक, पीयूष शास्त्री

डॉ. संजीवजी गोधा का तूफानी दौरा

समाज के विशेष आमंत्रण पर बुन्देलखण्ड के अनेक गांवों में डॉ.संजीवजी गोधा द्वारा दिनांक 14 से 21 अप्रैल तक धर्मप्रभावना की गई।

इसके अन्तर्गत **गौरझामर** में 5, **गढाकोटा** में 6, **पथरिया** में 1, **खड़ैरी** में 5 एवं **फुटेरा** में 1 प्रवचन हुये। सभी स्थानों पर जिनागम के महत्वपूर्ण विषयों के आधार से प्रवचनों द्वारा महती धर्म प्रभावना हुई।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

21 मई से 7 जून	खनियांधाना (म.प्र.)	प्रशिक्षण शिविर
9 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
16 से 20 जुलाई	चैतन्यधाम–अहमदाबाद	गुरुमंथनवाणी शिविर
23 जुलाई से 1 अग.	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

वेदी शिलान्यास एवं पंचपरमेष्ठी विधान संपन्न

गौरझामर-सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 शान्तिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मन्दिर ट्रस्ट द्वारा निर्माणाधीन शांतिनाथ जिनालय में दिनांक 14 से 16 अप्रैल तक वेदी शिखर शिलान्यास एवं जिनबिम्बों की भव्य अगवानी पर श्री पंचपरमेष्ठी विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा दोनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में सागर, करेली, केसली, पथरिया, दमोह, गढाकोटा, रहली, आरोन, जबेरा, भोपाल, मुम्बई, जयपुर आदि अनेक स्थानों से लगभग 700-800 साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. नन्हे भैया सागर एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली द्वारा संपन्न हुये। कार्यक्रम का संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री एवं निर्देशन पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री गढाकोटा ने किया।

इसके अतिरिक्त दिनांक 17 व 18 अप्रैल को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा सिद्धपूजन, पंचपरावर्तन, प्रवचनसार की 80वीं गाथा पर प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला। **– सचिन्द्र शास्त्री, गढाकोटा**

वैराग्य समाचार

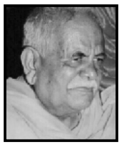

(1) करेली-नरसिंहपुर (म.प्र.) निवासी पण्डित कपूरचंदजी का दिनांक 17 अप्रैल को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी, गुरुदेवश्री के अनन्य शिष्य एवं करेली मुमुक्षु मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष थे। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में आपका अनन्य सहयोग रहा।

(2) टडा- (म.प्र.) निवासी पण्डित कोमलचंदजी जैन की धर्मपत्नी **श्रीमती विमला जैन** का दिनांक 29 मार्च को समता भावपूर्वक देहावसान हो गया। आप तत्त्वरुचि संपन्न, मृदुभाषी महिला थीं। टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित प्रशिक्षण शिविर में अनेक बार उपस्थित रहीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1100-1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें- वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

मंदिर शिलान्यास सानन्द संपन्न

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 19 से 21 अप्रैल तक श्री चन्द्रप्रभ मण्डल विधानपूर्वक मंदिर शिलान्यास कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

इस कार्यक्रम में सागर, जबलपुर, छिन्दवाड़ा, करेली मुमुक्षु मण्डलों का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर लगभग 600 साधर्मियों ने लाभ लिया। विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा संपन्न हुये।

हर्ष का विषय है कि जिनालय में विराजमान होने वाली तीनों प्रमुख प्रतिमाएं टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक भानुजी शास्त्री, मनीषजी कहान एवं राजेन्द्रजी शास्त्री के परिवारों द्वारा विराजमान की जायेंगी। **– पंकज शास्त्री**

पण्डित विपिनजी शास्त्री, मुम्बई द्वारा –

अमेरिका में धर्मप्रभावना

शिकागो (अमेरिका) : यहाँ महावीर जयंती के अवसर पर लगभग 300 साधर्मियों की उपस्थिति में श्री महावीर पंचकल्याणक विधान आनन्द के साथ संपन्न हुआ। इसी प्रवास के दौरान शिकागो मण्डल ने दो दिन द्रव्य-गुण-पर्याय विषय पर 3-3 घण्टे सेमिनार का आयोजन किया, जिसका युवावर्ग ने विशेष लाभ लिया।

पण्डित विपिनजी मुम्बई के इसी एक माह के प्रवास के दौरान अमेरिका के कई नगरों में भ्रमण हुआ, जिसके अन्तर्गत न्यूजर्सी, नोरिस टाउन (पेन्सिलवेनिया), केरी (नॉर्थ केरोलोना) आदि नगरों में भी प्रवचनों का आयोजन हुआ। शिकागो प्रवास के दौरान प्रतिदिन स्वाध्याय का लाभ समाज को मिला।

ज्ञातव्य है कि आप पिछले 12 वर्षो से निरंतर अमेरिका में दशलक्षण पर्व एवं अन्य अनेक अवसरों पर अपने व्यापारादिक कार्यो के साथ-साथ तत्त्वप्रचार के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। **– फाल्गुनी बेन शाह**

प्रकाशन तिथि : 28 अप्रैल 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com